IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कमयाबि के शिखिर पर नारि के विविध रुप

डॉ. एम.बी.नायक

सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग

श्री कुमारेश्वर कला और वाणिज्य महाविद्यालय- हानागल – 581104

सारांश

नारी अपनी पूर्ण शक्ति के सात अपनी गरीमा एवं अस्मिता को प्राप्त कर रही है | उसका उपेक्षा से भरा हुआ जीवन अब समाप्ति की कगार पर है | देश और दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में वह अब किसी भी स्तर पर पुरुष से कम नहीं है | स्त्री ने अब यह साबित किया है कि, वह देवी बनकर मंदिरों की चार दिवारी में या स्त्री बनकर घर गृहरिस्त का चूल्हा-चौका, कपडे-बरतन धोते रहने में ही अपने आपको खपाना नहीं चाहती | उसने दुनिया को बनाया है कि वह भी एक मानवी है | उसें भी अपनी जिंदगी जीने का पूर्ण अधिकार है | वह दया की पात्र बनना नहीं चाहती | वह शक्तिस्वरूपा बनकर जीना चाहती है |

प्रस्तावन

देश और दुनिया के हर एक क्षेत्र में वह अपनी काबिलियत के दम पर अपना परछम लहरा रही है | पिछले कुछ वर्षो से भारतीय समाज में काफी कुछ बदलाव हुआ है | असल में देखा जय तो इस प्रकार का सामाजिक परिवर्तन अखंडित चलने वाली प्रक्रिया है |परन्तु सटोत्तरी युग में यह सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया लोगों के अंदर बाहर काफी कुछ बल पकड़ रही है | देश की आर्थिक, सामजिक, धार्मिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्तिति में नई उद्भावनाये सामने आने लगी है | इन उड्भावानाओ में से एक प्रमुख एड्भावना है- नारि चेतना या नारी सशक्तिकरण |

मनुवादी समाव्यवस्था में नारी का स्थान शुद्रों कासे भी अतिशुद्र सा था | ऐसे प्राचीन अमानवीय साड़ी-गलीमान्यताओका टकराव नवीन सामाजिक संरचना के निर्माण में होता है | सामाजिक चिंतकों ने स्त्री पुरुष सामानता की गुहार लगाई | मं. फुले, सावित्रीबाई फुले, राजर्षी शाहू महाराज, महर्षि कर्वे आदि के योगदान से नारि शिक्षित बनकर पशुवत जीवन बितानेवाली नारि की यह मानवी बनने का संघर्ष आसान नहीं है | क्योंकि सामाजिक मान्यताये एवं परम्पराए बदलते-बदलते बदलती है | जो कोई इन्हें एकदम रातो रात बदलने की कोशिष करता है, समाज उसे हाशिये पर डाल देता है सदासर्वदा के लिए | नारी की यह संघर्ष यात्रा उसके खून से लिखी क्रांती है ऐसा कहने में मुझे कोई अतिश्योक्ति नहीं महसूस होती | भारतीय धर्मसत्ता की बदलती नई व्याक्या के कारण ही स्त्रीयों को उसकी खोई हुई गरीमा एवं उंचाई फीर से वापस मिल रही है | भारतीय समाजव्यवस्था अब स्त्री-पुरुष समानता को स्वीकार कर रही है | □स्त्री-

पुरुष के सम्बंधो में उपस्थित परिवर्तनों के कारण परम्परागत संस्कारो, मान्यतावो, धारणाओ में परिवर्तन होने लगा हो नारि ने अपने स्म्घर्ष से अपनी काबिलियत का लोहा पुरुषों से मनवाया है इस में अब कोई शक नही है | नारी की चेतना एवं प्रगति को हम एस प्रकार से समझ सकते है |

नारि के विविध रुप

समाज में सामाजिक जीवन व्यतीत करते समय नारी के विविध रुप देखने को मिलते है | वह बेटी, पत्नी, बहु भाभी, मौसी, खाला, दादी, नानी, चाची, मामी, साँस, प्रेयसी आदि पारिवारिक रूपों के साथ कई सामाजिक रूपों में भी अपने आपको डाल रही है | मदर तेरेसा, मेधा पाटकर, डा. साधना आमटे आदि जैसे उच्चतम समाज सेविका के रुप में भी नारी अपना दमखम दिखा

रही है | हेलरी किल्निटन, सोनिया गांधी, सुष्मा स्वराज,ममता बानर्जी, स्मृती इरानी, मायावती, जैसी कुशल राजनीतिज्ञ बनकर राष्ट्रसेवा भी कर रही है | मेरी कोम, सानिया नेहवाल, सानिया मिर्जा, माँट्रीना हिंगिस, अंजुम चौप्रा, सरीना विलियम के रुप में खेलकूद के मैदान में भी नारी अपना हुनर साबित कर रही है |

साथ ही भारतीय प्रशासनिक एवं पोलिस सेवाऐ, तलाटी, सरपंच, न्यूज एंकर, होटल मनेजर, डाक्टर, सेल्स गर्ल, रिशप्श्निष्ट, विविध कम्पनियों की मनजिंग डायरक्टर, आतोचालक, टेक्सी चालक से लेकर टेन, हवाईजहाज चलनेवाली नारी अपनी योग्यता के कारण ही सफलतम उंचाईयों के कदम चूम रही है | लता मंगेश्कर उषा भोसले, साधना सरगम, श्रेया घोषाल, सुनिती चौहाण आदि के कंट मधुर ध्वनी ने सम्पूर्ण विश्व की मानवीय सत्ता को मंत्रमुग्ध कर दिया है |

बालीवुड, हालीवुड, के साथ साथ अनेक चित्रपट सृष्टि में नारि शक्ति एवं सौदर्य का ही बोलबाला है | यहाँ नारी अपने अभिनय एवं मनमोहक अदाकारी से वैश्विक बाजार में करोडों का व्यापार कर रही है | इसके साथ ही जिस समाज ने नारि को अपने घर की चौखट लांघने की पांबदी लगाई थी उसी समाज में कल्पना चावला जैसी प्रतिभावान एवं साहसी महिला आकाश कन्या बनकर अपनी कल्पनाओ को पंख लगाकर अंतरिक्ष की सौर कर रही है | विश्व में अपना तथा अपने देश का नाम रौशन कर रही है | क्या यह सब नारी शक्ति का अग्निपंख नही है | नारी की यह कामयाबी की आसमानी उडान किसी फिनिक्स पक्षी से कम कहा है |

मातृत्व की नई परिभाषा

सृष्टि ने मातृत्व का अनुपम उपहार दिया है |पृथ्वी पर सुक्ष्म जीव से लेकर सृष्टी के रचयीता थ सब की जन्मदात्री कोई न कोई माँ ही होती है | स्त्री तो मानव की जन्मदात्री है | माँ अपने परिवार की सृष्टा एवं नियंता होती है | अपनी जान को जोखिम में डालकर बच्चे को जन्म देना, स्वयं को खपाकर उस नवजात का पालन पोषण करना, उसे जीवन मूल्यों एवं सद्गुणों से

सम्पन्न कराकर एक अच्छा नागरिक बनाना आदि सभी काम माँ ही करती है | ओ भी निस्वार्थ होकर आदि-अनादी काल से मध्ययुग तक भले ही स्त्री को पुरुषों की अपेक्षा गौण तथा हीं स्थान प्राप्त हुआ है | परंतु आधुनिक युग में स्त्री किसी से अपनि तुलना करना नहीं चाहती | उसने अपनी क्षमता एवं काबिलियत को पहचान लिया है | प्रेरणा साखान नामक कवियित्री अपनी स्म्घर्ष नामक कविता में लिखती है –

मै यदि धरा की धुल हु
तो क्या हुआ |
मुझे गगन के भाल का स्पर्ष करना है |
हजारों शूल के पथ में,
जरा विचलित ण होना है,
अभी तो दिन नही निकला है,
मुझे तो रात भर जीवन से संघर्ष करना है |

नारि वात्सल्य की साक्षात मूर्ति है | नारि के इसी गुणों के कारण ही पुरुषों का वंश बदता है, उसकी सभ्यता का विकास होता है | आधुनिक युग में नारि अपनी स्वतंत्रता को किसी भी कीमत पर गिरवी रखना नहीं चाहती | स्वाधीनता के बाद स्त्री केवल स्व के अधीन रहने में विशवास करती है | वह अपनी शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता पर ही माँ बनने का जोखिम उता रही है | किसी और के दबाव को वह अब नहीं मानती | आज की नारी अपनी इच्छा से ही माँ बनना चाहती है | वह पति या किसी के दबाव में आकर माँ बनना स्वीकार नही करती |

अपनी परिवार के उज्वल भविष्य के लिए उसने छोटे परिवार की संकल्पना को स्वीकार किया है | ' हम दो हमारा एक ' एसी मान्यताये उसे मान्य हो रही है | अपने बच्चों को कौन से स्कुल में पड़ना है, कौनसी शिक्षा देनी है इन सब बातों का निर्णय लेते समय उसकी राय भी ली जा रही है | घर परिवार के शादी व्याह आदि जैसे महत्वपूर्ण निर्णय भी उसकी रजामंदी के बिना पूर्ण नहीं होते | इस प्रकार से अपने परिवार को कामयाबी के शिखर पर पहुचाने के लिए वह सदैव् तत्पर है | आफिसों में काम करने हुए भी वह अपने बच्चों की परवरिश में अपना पूर्ण योगदान दे रही है | एक परिवार माँ से अनगिनत अपेक्षाएं रखता है | नारी अपने अनेक रूपों में (बेटी, माँ, पत्नी, बहु, भाभी, साँस) अपने अंगभुत गुणों दया, क्षमा, शांति, करुना, वात्सल्य, ममता, संयम आदि के साथ पारिवारिक जीवन में सुख एवं शांति का निर्माण कर रही है | कौसल्या बैसंत्री नामक लेखिका ने दोहरा अभिशाप नाकम अपनी रचने में एक एसी माँ का पात्र वर्णनीत किया है जो पड़ी-लिखी होकर भी परिवारी जिम्मेदारियों को बखूबी निभा रही है | बच्चे इश्वर की देन होती है इस प्राचीन मान्यता का वह खुलकर विरोध भी करती है |

साहसी एवं निर्भया नारी

समय के साथ स्त्री की शरीरिक एवं मानसिक क्षमता का भी विकास हुआ है | अबला जीवन हाय ! तुम्हारी यही कहानी | आंचल में है दूध और आंखो में पानी | वाल नारी अब सबला एवं साहसी बन गयी है | अपने आपको देखने का उसका नजरिया पूर्णत बदल गया है | वह अपने आपको भी परिवार एवं समाज की एक महत्वपूर्ण इकाई मानती है | अब किसी स्वार्थी पुरुष के हाथों की कटपुतली बनकर रहना उसे पसंद नहीं है | दोहर अभिशाप की नायिका को भली भांति ज्ञान हुआ है कि, दलित स्त्रीयों को उसकी खुदकी लड़ाई उसे स्वयं लडनी होगी | वे अपने सही विरओधको को पहचानकर उनसे दो – दो हाथ करने के लिए सदैव तैयार है | इससे यह बात पता चलती है कि अब नारि शिक्षित होकर सजग हो रही है | उसमें नवजागरण की चेतना निर्माण हो रही है | वह प्यार से अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार है परंतु जोर जबरदस्ती का वह खलकर कड़ा विरोध करती है | दौहरा अभिशाप की नायिका को भली भांति ज्ञान हुआ है कि, दलित स्त्रियों को उसकी खुदकी लड़ाई उसे स्वयं लडनी होगी | वे अपने सही विरोधकों कोपहचानकर उनसे दो – दो हाथ करने के लिए सदैव तैयार है | इससे यह बात पता चलती है कि अब नारी शिक्षित होकर सजग हो रही है | उनमें नवजागरण की चेतना निर्माण हो रही है | वह प्यार से अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तैयार है परंतु जोर जबरदस्ती का वह खलकर कड़ा विरोध करती है | दौहरा अभिशाप की नायिका का अपने पति की मानसिक गुलामी को त्यागकर अपने बेटे के साथ रहना उसकी स्वतंत्र मानसिकता को सिध्द करता है | मालती जोषि लिखित 'निर्वासित कर दी तुमने मेरे प्रीत' नामक कहानी की 'सुमी' नामक पात्र अपने ही शादी में लडके वालो व्दारा अपने परिवारवालों का हो

रहा अपमान चुपचाप सहन नही करती | बारात में आये लडकेवालों व्दारा उसके पिता को भला बुरा कहने से उसका खून खौलने लगता है | अबला की तरह रहना उसे कतई पसंद नहीं है | वह छत से उतरकर मंडप में आती है | अपनि शादी स्वयं तुडवाकर ऐसे लोगों के घर की बहू बनने से इनकार करती है जहा स्त्रियों की इज्जत करने के संस्कार न हो ।यह सुनना था कि मुझे तो जौसे आग लगा गई | मै दालनसीडिया फलागती निचे उतर आई | बीच मंडप में आकर मैंने ऐलान कर दिया, 'बाबूजी, इन लोगों को बिदाकर दीजिए | यह शादी नही हो सकती |। इसी एकांकी की अन्य पत्रा 'पम्मी' तथा 'दिव्या' ने भी अपने निडरता एवं साहस का परिचय दिया है | दोनों ने सभी प्राचीन परम्पराओं को छेद देते हुए अपने लिऐ अपनी इच्छा से सपनों का जीवन साथी चुना | ।पम्मी ने भी कीसी को जहमत नही दी | किसी के अहसान नहीं लिए | उसने खुद अपना पति चुन लिया और मंदिर में फेरे ले लिए | घरवालों को बाद में सूचना भेज दी | उसे गर्व है की उसके ली न किसी ने जुते चटकाए, ण किसी के पैर पूजे |।

दिव्या भी बिलकुल अपनी बुआ के जैसी ही है | वह लडकी होकर शादी करके अपने माता पिता को अकेला छोड़ना नहीं चाहती | वह लडकी बनकर ही अपने माता – पिता का सहारा बनना चाहती है | अपनी शादी वाले दिन वह अपनि बुआ 'सुमि' से कहती है – ।अगर मेरा वष चलता तो मम्मी – पापा को इस उग्र में अकेला छोड़कर मै कही नहीं जाती |। वह दहेज का कडा विरोध भी कराती है | अपने लिए ऐसा जीवन साथी चुनती है जो दहेज न ले |

लिंग भेदात्मक कमजोरी से मुक्ति

प्रकुति ने ही स्त्री को मातृत्व, करुणा, सह्रदयी, कोमलता आदि गुनों से नवाजा है |पुरुष प्रधान समाज की नजर में स्त्री अबला, कमजोर है | वह उसे सदैव अपने अधीन रखना चाहता है | स्त्री को तन-मन-धन से अपना गुलाम बनाने की पुरुषी मानसिकता का नारि खुलकर विरोध कर रही है | स्त्री अपना मूल्य अपने तन-मन से लगनेवाली पुरुषी सोच को बदलना चाहती है| वह अपना गुणवत्ता एवं काबिलियत को स्वयं सिध्द करना जानती है | पुरुष लिंग भेद की नींव डालकर अपना पुरुषी अहंकार बनये रखना चाहता है | आर्थिक रुप से स्वतंत्र एवं स्वावलम्बी होकर नारी उसे गुलाम बनाकर रखनेवाली विवाह संस्था का भी विरोध कर रही है | सदियों से पुरुषी गुलामी में पल रही नारि को आज स्व्छंद प्रिमिका बनकर रहना अधिक रास आ रहा है | नारी को मात्र भिग विलास की वस्तु समजनेवाली पुरुषी मानसिक को वह चुनौती दे रही है | परिवार एवं समाज में लड़का-लडकी में लिंगभेदात्म्क किये जानेवाले फर्क अब उसे कतई मान्य नहीं है | रामदरश मिश्र लिखित थकी हुई सुबह नामक कहानि की पात्रा लक्ष्मी हमें पूछती है – । क्या स्त्रीयों को कोई दूसरा ईश्वर पैदा करता है यो यहाँ स्त्री – पुरुष के लिऐ दो नियम है |।

नारी अब अपने भविष्य के प्रति भी अधिक सजग है | वह अपने भविष्य को खुद संवारना चाहती है | वह अब उस प्राचीन पुरुषप्रधान मानसिकता से बाहर निकल रही है जुसने नारी को एक गाय की तरह समझता था | चाहे जिस खुंटे से बांध दो वह उफ़ तक न करती थी | ।औरत कोई बोनसाई का पौधा नहीं है-जब जी चाहे उसकी जड़े काटकर उसे वापस गमलों में रोप दिया | वह बौना बनाए रखने की इस साजिष को अस्वीकार भी कर सकती है |।

नारी सभी बंधनों से मुक्त तो होना चाहती है परंतु स्वैराचारी बनना नहीं चाहती | उसे पुरुष की पत्नी बनकर रहने से अधिक पसंद है उसकी प्रिमिका (compenien) बन कर रहना | वह पुरुष से प्रतिस्पर्धा नहीं करना चाहती | बल्कि उसकी अनुगामिनी बनना चाहती है |

साक्षर, सुशिक्षित एवं आत्मनिर्भर

आजादी के पश्चात 20 वी सदी के अन्तिम दशक में नारी शिक्षा का प्रतिशत बढ रहा है | स्त्री अधिक सजग होकर अपनी साक्षरता के प्रति सचेत हो रही है | हर साल वर्तताण पत्रों में इसके प्रमाण भी मिल रहे है | दसवी-बारहवी बोर्ड की परीक्षाऑ में उतीर्ण होनेवाली एवं टाप करनेवाली लडकियों का अनुपात लडकी की तुलना में अधिक है |

नारी इस संघर्षमय युग में सबसे अपनी शक्ति का लोहा मनवा रही है | उसने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया है | वह साक्षर बनकर सुशिक्षित भी हो रही है | वह भावनाओ की अपेक्षा उसका व्यवहारिक दुष्टिकोन उसे पुरुषों के कंधे

से कंधा मिलाकर काम करने की प्रेरणा दे रहा है | नारी विमर्श केवल पुरुषी सत्ता का विरोध नहीं बल्कि साक्षर, सुशिक्षित एवं आत्मनिर्भर बनती नारी का जीवन संघर्ष है | वह अपनी अस्मिता को बचाये रखने के लिए मुमकीक हर एक प्रयास कर रही है | मात्र भावनाओं की सहारे जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा आज की नारी व्यवहारिक दृष्टिकोण को लेकर है | वह पुरुष के कंधे से कंधा मिलकर चलने में विश्वास रखती है | परम्परागत संस्कारों में जकड़े समाज में टोस कदमों पर खड़ा रहने के लिए आज की नारी जैविक, आर्थिक, सामाजिक, मानसिक तथा राजनीतिक धरातल पर संघर्ष करती दिखाई देती है | नारी आत्मनिर्भर बनकर खुद का अस्तित्व एवं पहचान अपने बलबूते पर बनाना चाहती है | वह पुरुष चाहे उसका पति ही क्यों ण हो, उसके सहारे से वह आगे बढना या पहचाने जाना नहीं चाहती | वह अपनी प्रतिभा से अपना अस्तित्व दर्शाना चाहती है | वह एक स्वयं प्रकाशित सितारा बनना चाहती है | वह अपनी चूड़ीया, सिंदूर, साडी को अपनी कायरता या कमजोरी के प्रतीक बनने नहीं देना चाहती | वह उसे भारतीय संस्कृति एवं संसकारों का प्रतीक मानती है | राजनीति में अगर कोई सरकारी पक्ष को कडियाँ, साडी देकर उसकी कमजोरी को उजागर करनेवाली पुरुषी मानसिकता का वह विरोध करती है | स्त्री लेखिका 'रमणिका गुप्ता' ने अपनि आत्मकथा 'हादसे' में एक प्रभावशाली नारी के रुप में अपना वास्तविक चित्रण किया है | वह स्वयं एक कांग्रेस पार्टी की सक्रीय नता के रुप में काम कराती है | परंतु पार्टी में अपने लिए प्रतिकूल परिस्थिती देखकर वह अपने पद से इस्तीफा देकर वह अपने पद से इस्तीफा देकर संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी में शामिल हो जाती है | वह अपने त्यागपत्र में अपने स्वतंत्र एवं सक्षम होने का परिचय देते हुए लिखती है कि, मै अपना रास्ता खुद बनाने में सक्षम हु उसलिए अपना रास्ता खोज लुंगी, नहीं तो रास्ता ही मुझे खोज लोग |

इसी संदर्भ में और अधिक प्रकाश डालते हुए डा. शोख शहेनाज अहेमद लिखते है आज नारी शक्ति को पहचान मिल रही है | समाज और परिवार में नारी के स्वतंत्र अस्तित्व, व्यक्तित्व एवं पहचान को स्वीकार किया जा रहा है | वह घर और बाहर पुरुष के साथ जीवन के विविध क्षेत्रों में सफलतापुर्वक अपनी भूमिका का निर्वाह कर रही है | समाज का उसकी ओर देखने का दुश्तकोण काफी परिवर्तित हो गया है | आधुनिक नारी अपनी इच्छानुसार जीवन यापन करने की कोशिशि करती है | वह रूडी, परम्पराओं का विरोध कर राजनितिक और सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रही है | यही है आज के नारि की शक्ति का परिचय |

निष्कर्ष

आधुनिक काल में नारी ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व सिध्द कर लिया है | लिंग भेदात्म्कता के चलते समाज के एस आधे हिस्से का पुरुषों ने अपने स्व हीन मानकर जहा हशिये पर डाल दिया था, वहीं नारी मानव समाज के केंद्र में आकर चिंतन एवं चेतना का विषय बनी है | उसका निरक्षरता से साक्षर बनना, अबला से सबला बनने तक का सामाजिक जीवन प्रवास भले ही संघर्षमय रहा हो परंतु अब उसके अस्तित्व को पुरुष प्रधान भारतीय समाज में काफी हद तक निर्विवादित रुप से स्वीकार किया है | सामजिक, अर्थीक, राजनीतिक, शैक्षिक, धार्मिक, संस्कृतिक आदि क्षेत्र में उसने अपनी खुदकी पहचान बना ली है | हिंदी साहित्य अपनी सभी विधाओं में पूर्ण शक्ति के साथ नारी की इस संघर्षमयी आंदोलानात्मक यशोगाथा को वर्णनीत कर रहा है | आनेवाले भविष्य में यह गौरवमयी भारतीय संस्कृति का पुनर उत्थान कहलाएगा अब इसमें कोह दोराय नहीं है |

संदर्भ संकेत

01. डा. रधुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी,एस. पब्लिकेशन, वाराणसी / प्रथम संस्करण: 2012 पुष्ट : 86
02. डा. रधुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी,एस. पब्लिकेशन, वाराणसी / प्रथम संस्करण: 2012 पुष्ट : 86
03. प्ररेणा साखन : संखर्ष (कविता-बयान)पुष्ट : 30
04. डा. रधुनाथ गणपति देसाई : महिला – आत्मकथा लेखन में नारी / ए.बी,एस. पब्लिकेशन, वाराणसी / प्रथम संस्करण: 2012 पुष्ट : 86
05. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेस्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पुष्ट 16,17
06. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेस्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पुष्ट 17
07. मालती जोशी : औरत एक रात है / परमेस्वरी प्रकाशन, दिल्ली / संस्करण : 2004 पुष्ट 23
08. सम्पा. डा. भालेराव विश्वनाथ, प्रा.सुर्यवंशी बालाजी, प्रा. सौ. प्रणीता पाटिल : इक्कीसवी शताब्दी के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य / अक्षर वाड्मय प्रकाशन, पुणे / प्रथम संस्करण : फरवरी 2015 पुष्ट : 42
09. रमणिका गुप्ता : हादसे (आत्मकथा से)
10. सम्पा. डा. भालेराव विश्वनाथ, प्रा.सुर्यवंशी बालाजी, प्रा. सौ. प्रणीता पाटिल : इक्कीसवी शताब्दी के प्रथम दशक का हिंदी साहित्य / अक्षर वाड्मय प्रकाशन, पुणे / प्रथम संस्करण : फरवरी 2015 पुष्ट : 56
11. रामदरश मिश्र : थकी हुई कहानी
12. चित्रा मुद्गल : एक जमीन अपनी अपनी (उपन्यास).